COURSE NAME –M.Ed IV SEMESTER
SUBJECT NAME = EDUCATION TECHNOLOGY & ICT (SC-5)

TEACHING AND LEARNING
शिक्षण और अधिगम

CONCEPT OF TEACHING

शिक्षण का संप्रत्यय :- शिक्षण का प्रत्यय अधिक जटिल होता है | यह एक सामाजिक प्रक्रिया है, इसलिए शिक्षण का कोई सर्वमान्य सिद्धांत तथा व्यापक परिभाषा नही दी जा सकती है | सामाजिक तथ्य शिक्षण को प्रभावित करते है | सामाजिक तथ्य एवं मानवीय घटक परिवर्तनशील होते है और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए तथा सामाजिक नियंत्रण के लिए कारक मानी जाती है |

इस पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली,सामाजिक दर्शन,सामाजिक तथा दार्शनिक परिस्थितियों,मूल्यों आदि का प्रभाव पड़ता है | जिस देश में जैसी शासन प्रणाली, सामाजिक या दार्शनिक परिस्थितियां होंगी वहाँ उसी प्रकार शिक्षण प्रणाली होगी|

विभिन्न विद्वानों द्वारा शिक्षण की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गयी है :

स्मिथ के अनुसार, "शिक्षण का उद्येश्य निर्देशित क्रिया है |"

क्लार्क के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है,जिसके प्रारूप तथा सञ्चालन की व्यवस्था इसलिए की जाती है जिससे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके|

स्किनर के अनुसार, "शिक्षण पुनर्बलन की CONTINGENCIES का क्रम है |"

CONCEPT OF LEARNING

अधिगम का संप्रत्यय:- अधिगम या सीखना शिक्षा के सभी स्वरूपों में केंद्र बिंदु मन जाता है | अधिगम कि प्रक्रिया सभी जीवों में होती है किन्तु उनकी विशष्टताएँ अलग-अलग होती है | मानवीय सन्दर्भ में देखे तो शिक्षा एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है | यह प्रक्रिया गर्भावस्था में ही प्रारम्भ हो जाती है, मानव अपने प्रारम्भिक विकास क्रम में पराश्रित या असहाय जीव के रूप में अधिगम करता है

किन्तु धीरे-धीरे वह आत्मनिर्भर,स्वतन्त्र एवं आवश्यकताओं के क्षेत्र में अधिगम करता है |

सामान्य अर्थों में अधिगम को व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन के रूप में स्वीकार किया जाता है परन्तु सभी प्रकार के व्यवहार परिवर्तन अधिगम की परिधि में नही आते | मनोवैज्ञानिकों ने केवल अभ्यास,अनुभूति,प्रशिक्षण,शिक्षण,अनुभव आदि के फलस्वरूप व्यवहार में हुए परिवर्तनों को अधिगम माना है | व्यवहार में परिवर्तन कई कारणों से होता है जैसे - मानसिक या शारीरिक थकावट,मादक द्रव्यों,बीमारी,औषधि खाने,क्रोध,भय आदि लेकिन इन्हें अधिगम की संज्ञा नही दी जा सकती |

विभिन्न विद्वानों द्वारा अधिगम की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गयी है :-

स्किनर के अनुसार, "सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है |"

गिलफोर्ड के अनुसार, "व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है |"

क्रो एंड क्रो के अनुसार, "आदतों,ज्ञान, तथा अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम है |

****

NATURE OF TEACHING

शिक्षण की प्रकृति :-

शिक्षण की प्रकृति को हम निम्नलिखित रूप में समझ सकते है **:-**

- शिक्षण एक अन्तः प्रक्रिया है,जो शिक्षक तथा छात्रों के मध्य विशेष कार्य के लिए संचालित होती है |
- शिक्षण एक सामाजिक तथा व्यावसायिक प्रक्रिया है,जो शिक्षक तथा छात्रों के समूह में ही सम्पादित कि जाती है |
- शिक्षण एक सोद्द्येश्य प्रक्रिया है,जो किन्ही विशिष्ट उद्द्येश्यों की प्राप्ति के के लिए की जाती है |
- शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्रों में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों का विकास किया जाता है |

- शिक्षण की प्रकृति कलात्मक तथा वैज्ञानिक दोनों ही है | शिक्षण नियोजन तथा मूल्यांकन क्रियाओं कि प्रकृति वैज्ञानिक अधिक है,जबकि शिक्षण का प्रक्रिया पक्ष कलात्मक है, जिसमे शिक्षण अपने कौशल का प्रयोग करता है |
- शिक्षण में तथ्यों,प्रत्ययों,सिद्धांतों तथा सामान्यीकरण का बोध भाषा के प्रयोग द्वारा शिक्षण कराता है |
- शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है ,जिसमें छात्र व शिक्षण आमने-सामने बैठते है |
- शिक्षण एक उपचार प्रक्रिया है,जिसमें छात्रों की कमजोरियों का निदान करके उन्हें निदान के लिए उपचार दिया जाता है |
- शिक्षण एक तार्किक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण का नियोजन शिक्षक की तर्कशक्ति पर ही आधारित होता है | पाठ्यवस्तु का विश्लेषण तथा संश्लेषण तर्कशक्ति द्वारा ही किया जाता है |
- शिक्षण का मापन किया जाता है | निरीक्षण विधियों द्वारा शिक्षक व्यवहारों के स्वरूप का विश्लेषण भी किया जाता है |
- शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है | अधिकांश शिक्षाशास्त्रीयों ने शिक्षण को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया कहा है | ब्लूम के अनुसार ,शिक्षण के तीन पक्ष -

  १.शिक्षण उद्देश्य

  २.सीखने का अनुभव

  ३.व्यवहार परिवर्तन है

****

PHASES OF TEACHING

शिक्षण के चरण :- शिक्षण के तीन चरण होते है- १.पूर्व क्रिया अवस्था २.अन्तः क्रिया अवस्था ३.उत्तर क्रिया अवस्था

१.पूर्व क्रिया अवस्था - इसमें शिक्षण के लिए योजना तैयार की जाती है | शिक्षक छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षण की योजना बनाता है और पढाने कि तैयारी करता है | इस अवस्था में वे सभी क्रियाएँ आती हैं जो शिक्षक कक्षा में जाने से पूर्व करता है | इस अवस्था को शिक्षण नियोजन अवस्था भी कहते है | शिक्षण की इस अवस्था में शिक्षक शिक्षण योजना का चयन करता है ,उसका नियोजन करता है जिससे अपने उद्देश्यों को वह प्राप्त कर सके| शिक्षक अपने शिक्षण को सुनियोजित तथा सफल बनाने के लिए निम्नलिखित क्रियाएँ करता है |

- शिक्षण के उद्द्येश्यों को निर्धारित करना
- पाठ्यवस्तु के सम्बन्ध में निर्णय लेना
- पाठ्य-वस्तु के अवयवों की क्रमबद्ध व्यवस्था
- युक्तियों एवं प्रविधियों के सम्बन्ध में निर्णय
- पाठ्य-वस्तु के लिए युक्तियों का विकास करना

२.**अन्तः क्रिया अवस्था-** इस अवस्था में वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित होती है,जो शिक्षक कक्षा में प्रवेश करने के समय से लेकर पाठ्य-वस्तु प्रस्तुत करने के समय तक रहता है | इस अवस्था में शिक्षक और छात्र कक्षा में आमने-सामने होते है | शिक्षक शाब्दिक या अशाब्दिक प्रेरणा प्रदान करता है | शिक्षक इस अवस्था में पहले से तैयार कि गई शिक्षण कि योजना का क्रियान्वयन करता है शिक्षण की अन्तः क्रिया अवस्था में निम्नलिखित क्रियाएँ होती है -

- कक्षा के आकार की अनुभूति
- छात्रों का निदान
- क्रिया तथा प्रतिक्रिया

३. **उत्तर क्रिया अवस्था -** इस अवस्था में शिक्षण कार्य समाप्त हो जाने के बाद शिक्षक सीखे गए कार्य का मूल्यांकन करता है | मूल्यांकन का कार्य उद्द्येश्यों

के आधार पर किया जाता है | मूल्यांकन करके शिक्षक यह जानने का प्रयास करता है कि कक्षा में उसने जो भी पढाया है उसका प्रभाव छात्रों पर कैसा पड़ा तथा उनके व्यवहार में किस सीमा तक परिवर्तन आया | इसके लिए शिक्षक मौखिक तथा लिखित प्रश्न पूछता है ,जिसे शिक्षण की अंतिम अवस्था या उत्तर क्रिया अवस्था कहते है | इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है

- मानदंड व्यवहार
- मूल्यांकन की प्रविधियों का चयन
- प्राप्त परिणामों से शिक्षण नीतियों में परिवर्तन

शिक्षण की क्रियाओं का मुख्य लक्ष्य छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाना होता है | प्रत्येक राष्ट्र और समाज अपनी संस्कृति तथा मूल्यों को शिक्षण की क्रियाओं द्वारा नई पीढ़ी को देता है | इसलिए समाज शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करता है, जिनमे शिक्षण क्रियाएँ सम्पादित की जाती है |

****

LEVELS OF TEACHING

शिक्षण के स्तर :- शिक्षण एक सोद्द्येश्य प्रक्रिया है या कह सकते है कि कक्षा में विभिन्न कार्यों को संपन्न करने की एक व्यवस्था है ,जिसका उद्द्येश्य छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करना है | शिक्षण और सीखने का घनिष्ठ सम्बन्ध है ,यहाँ तक कि शिक्षण-सीखने का ही एक प्रत्यय माना जाता है, शिक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत पाठ्य-वस्तु एक महत्वपूर्ण उपागम है ,जिसके बिना शिक्षण नही किया जा सकता |एक ही पाठ्य-वस्तु को शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ 'विचारहीन' से अधिक विचारपूर्ण स्थिति तक विस्तृत करती है , अर्थात शिक्षण के ज्ञान उद्देश्य से लेकर मूल्यांकन उद्देश्यों तक की प्राप्ति की जाती है |

शिक्षण के इस सतत क्षेत्र को प्रमुख रूप से तीन स्तरों में विभाजित किया गया है

१. स्मृति स्तर/ हरबर्ट शिक्षण आयाम

२. बोध स्तर / मॉरिसन शिक्षण आयाम

३. चिंतन स्तर / हंट शिक्षण आयाम

१.**स्मृति स्तर के शिक्षण की व्यवस्था :-** स्मृति स्तर के शिक्षण की क्रियाएँ ऐसे अधिगम की परिस्थितियों को उत्पन्न करती है,जिसमे विषयवस्तु के तथ्यों को छात्र केवल कंठस्थ कर सके | इस स्तर पर प्रत्यास्मरण तथा रटने की क्रिया पर जोर दिया जाता है |इस स्तर का अपना मूल्य है,अपना क्षेत्र है |इस स्तर का ज्ञान पाए बिना बोध एवं चिंतन स्तर ठीक कार्य नही कर सकते | अतः यह स्तर, अन्य विचारवान स्तरों के लिए आधारशिला प्रदान करता है |

स्मृति स्तर के शिक्षण का प्रतिमान :- इस स्तर के प्रतिमान का प्रतिपादन हरबर्ट ने किया है | स्मृति स्तर के शिक्षण के प्रतिमान के प्रारूप का वर्णन चार पक्षों में किया है -

हरबर्ट स्मृति स्तर शिक्षण प्रतिमान

क्र.सं	प्रतिमान पक्ष	स्मृति स्तर शिक्षण
१	उद्देश्य	१.मानसिक पक्ष का प्रशिक्षण २.तथ्यों का ज्ञान प्रदान करना ३.सीखे हुए तथ्यों का प्रत्यास्मरण रखना ४.सीखे हुए ज्ञान का प्रत्यास्म्रण करना तथा पुनः प्रस्तुत करना
२	संरचना	१.योजना बनाना २.प्रस्तुतीकरण ३.तुलना तथा समरूपता ४.सामान्यीकरण उपयोग
३	सामाजिक प्रणाली	१.अभिप्रेरणा के बाह्य रूप का अधिक प्रयोग २.शाब्दिक प्रेरणा ,पुरस्कार आदि का विशेष रूप से प्रयोग
४	मूल्यांकन प्रणाली	१.मूल्यांकन लिखित और मौखिक परीक्षाओं द्वारा किया जाता है २.परीक्षा में रटने की छमता पर अधिक बल

बोध स्तर का शिक्षण :- शिक्षण के क्षेत्र में बोध एक बहुत व्यापक शब्द है | बोध शब्द को मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने कई अर्थों में प्रयुक्त किया है, इसलिए शिक्षक भी इस शब्द को अनिश्चित ढंग से प्रयुक्त करता है | शब्दकोष में भी इसके कई अर्थ दिए गए है; जैसे-

१. अर्थ का प्रत्यक्षीकरण करना ,विचारों का बोध करना |
२. गहनता से परिचित होना,प्रकृति एवं स्वभाव को समझना |
३. भाषा में प्रयुक्त होने वाले अर्थ को समझना |
४. तथ्य के रूप में स्पष्ट बोध होना अथवा अनुभूति होना |

बोध स्तर के शिक्षण के लिए आवश्यक है कि इसमें पूर्व स्मृति स्तर पर शिक्षण हो चूका हो | इसके बिना बोध स्तर शिक्षण सफल नही हो सकता |शिक्षक इस स्तर पर छात्रों को सामान्यीकरण सिधान्तों तथा तथ्यों का बोध कराता है और शिक्षण प्रक्रिया को अर्थपूर्ण तथा सार्थक बनाता है

बोध स्तर के शिक्षण का प्रतिमान

बोध स्तर पर मॉरिसन द्वारा विकसित प्रतिमान का वर्णन निम्नलिखित है

मॉरिसन बोध स्तर शिक्षण प्रतिमान

क्र.सं	प्रतिमान पक्ष	बोध स्तर शिक्षण
१	उद्देश्य	प्रत्यय का स्वामित्व प्राप्त करना
२	संरचना	बोध स्तर के शिक्षण में निम्नांकित पाँच सोपान होते है- १.अन्वेषण २.प्रस्तुतीकरण ३.आत्मीकरण ४. व्यवस्था ५. अभिव्यक्तिकरण
३	सामाजिक प्रणाली	१.शिक्षक व्यवहार का नियंत्रक होता है | २. शिक्षक एवं छात्र दोनों सक्रीय रहते है | ३. छात्र अपने विचार प्रदर्शित कर सकते है | ४.बाह्य तथा आतंरिक दोनों प्रकार कि प्रेरणाएँ उपयोगी है | ५. सामाजिक व्यवस्था के प्रथम दो सोपानो में शिक्षक और अंतिम तीन सोपानों में छात्र-शिक्षक दोनों ही अधिक क्रियाशील हो जाते है|
४	मूल्यांकन प्रणाली	इसमें आवश्यकतानुसार लिखित,मौखिक,निबंधात्मक तथा वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन विधियाँ प्रयोग में लायी जाती है | प्रत्ययों के स्पस्टीकरण पर विशेष बल दिया जाता है |

चिंतन/विमर्शी स्तर का शिक्षण :- चिंतन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है | इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्रों में चिंतन, तर्क तथा कल्पना शक्ति को बढाता है जिससे बाद में ये छात्र इन उपागमों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सके | इस स्तर के शिक्षण में स्मृति तथा बोध दोनों स्तरों का शिक्षण निहित होता है | इसके बिना चिंतन स्तर का शिक्षण सफल नही हो सकता | चिंतन स्तर का शिक्षण समस्या केंद्रित होता है | इसमें छात्र को मौलिक चिंतन करना होता | छात्र विषय-वस्तु के सम्बन्ध आलोचनात्मक द्रष्टिकोण अपनाते है | छात्र सीखे हुए तथ्यों तथा समन्यिकर्नो की जाँच करता है और नवीन तथ्यों की खोज करता है |

चिंतन स्तर के शिक्षण प्रतिमान :- हंट को चिंतन स्तर के शिक्षण का प्रवर्तक माना जाता है | इसलिए इस शिक्षण स्तर के प्रारूप को हंट शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है | चिंतन स्तर के शिक्षण प्रतिमान के प्रारूप का अध्ययन चार सोपानों में किया जा सकता है -

हंट का चिंतन स्तर शिक्षण प्रतिमान

क्र.सं	प्रतिमान पक्ष	बोध स्तर शिक्षण
१	उद्देश्य	१.छात्रों में मौलिक व स्वतन्त्र चिंतन शक्ति का विकास करना २. छात्रों में समस्या समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिंतन शक्ति का विकास समस्या की प्रकृति पर आधारित
२	संरचना	१. छात्रों केव सामने समस्या परिस्थिति उत्पन्न करना २. छात्रों द्वारा उपकल्पना का निर्माण करना ३. उपकल्पना पुष्टि के लिए सूझ,चिंतन,मनन का प्रयोग करना ४. उपकल्पना का परीक्षा तथा समस्या समाधान करना
३	सामाजिक प्रणाली	१. कक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से खुला और स्वतन्त्र होता है २. छात्र क्रियाशील और स्वप्रेरित होते है ३. छात्रों के समाजीकरण का द्रढ आधार है ४. सक्ह्योग,सामाजिक सवेदनशीलता तथा सहानुभूति का वातावरण होता है
४	मूल्यांकन प्रणाली	१. निबंधात्मक मूल्यांकन अधिक उपयोगी है २. अभिवृत्ति,समस्या समाधान ,सृजनात्मक आदि के परिक्षण उपादेय है	